ईष्ट स्तुति

dreamstime

चन्द्र मिटे दिनकर मिटै, मिटै त्रिगुण विस्तार।
दृढ़ व्रत श्रीहरिवंश कौ, मिटै न नित्य विहार।।1।।

dreamstime

जोरी युगल किशोरी की, और रची विधि बाद।
दृढ़ व्रत श्रीहरिवंश कौ, निबह्यौ आदि युगादि।।2।।

निगम ब्रह्म परसत नही, जौ रस सबते दूरि।
कियौ प्रकट हरिवंशजू, रसिकन जीवन मूरि।।3।।
रूप बेलि प्यारी बनी, सु प्रीतम प्रेम तमाल।
दोऊ मन मिलि एकै, भये श्रीराधावल्लभलाल।।4।।

dreamstime

निकसि कुंज ठाढ़े भये, भुजा परस्पर अंश।
श्रीराधावल्लभ मुखकमल, निरखि नयन हरिवंश।।5।।

रे मन श्रीहरिवंश भज, जो चाहत विश्राम।
जिहि रस बस ब्रजसुन्दरिन, छाँड़ि दिये सुखधाम।।6।।

निगम नीर मिलि एक भयो, भजन दुग्ध सम स्वेत।
श्रीहरिवंश हंस न्यारौ कियौ, प्रकट जगत के हेत।।7।।

श्रीराधावल्लभ लाड़िली अति उदार सुकुमारि।
ध्रुव तो भूल्यौ ओर ते तुम जिन देहु बिसारि।।
तुम जिन देहु बिसारि ठौर मौको कहु नाही।
पिय रंग भरी कटाक्ष नेक चितवो मो माही।।
बढ़ें प्रीति की रीति बीच कछु होय न बाधा।
तुम हौ परम् प्रवीण, प्राण बल्लभ श्री राधा।।8।।

dreamstime

बिसरिहौ न बिसारिहौ यही दान मोहि देहु।
श्रीहरिवंश के लाड़िले मोहि अपनी कर लेहु।।9।।
कैसौउ पापी क्यों न हो श्रीहरिवंश नाम जो लेय।
अलक लड़ेती रीझि कै महल खवासी देय।।10।।
महिमा तेरी कहा कहूँ श्रीहरिवंश दयाल।
तेरे द्वारे बटत हैं सहज लाड़िली लाल।।11।।

सब अधमन कौ भूप हों नाहिन कछु समझन्त।
अधम उधारन व्यास सुत यह सुनिके हर्षन्त।।12।।
बन्दौ श्रीहरिवंश के चरण कमल सुख धाम।
जिनकौ वन्दत नित्य ही छैल छबीलो श्याम।।13।।
श्रीहरिवंश स्वरूप कौ मन वच करौ प्रणाम।
सदा सदा तन पाइये श्री वृन्दावन धाम।।14।।

जोरी श्रीहरिवंश की श्रीहरिवंश स्वरूप।

सेवक वाणी कुंज में विहरत परम् अनूप।।15।।

करुणानिधि अरु कृपानिधि श्रीहरिवंश उदार।

वृन्दावन रस कहन कौ प्रगट धरयौ अवतार।।16।।

हित की यहां उपासना हित के है हम दास।

हित विशेष राखत रहौ चित नित हितकी आस।।17।।

© dreamstime

हरिवंशी हरि अधर चढ़ि गूँजत सदा अमन्द।
दृग चकोर प्यासे सदा पाय सुधा मकरन्द।।18।।

श्रीहरिवंशहि गाय मन भावै यश हरिवंश।
हरिवंश बिना न निकसिहौ पद निवास हरिवंश।।19।।

।।जै जै श्री हित हरिवंश।।

dreamstime

।। जै जै श्री हित हरिवंश ।।